International Journal of Information Movement Vol.2 Issue VIII (December 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 197-202

शैक्षिक सुधार के रूप में मालवीय जी

सुषमा देवी
शोधार्थी (इतिहास विभाग)
श्री सत्यासाईं यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्नोलॉजी
एंड मैडिकल साइंसिज, सिहोर (एम.पी.)

डॉ. रेशमा आरा
निर्देशिका (इतिहास विभाग)
श्री सत्यासाईं यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्नोलॉजी
एंड मैडिकल साइंसिज, सिहोर (एम.पी.)

1.0 पं. मदनमोहन मालवीय जी का शिक्षा में योगदान :

जीवन के आरम्भिक काल में स्वतः एक शिक्षक होने के नाते वे वर्तमान शिक्षा–प्रणाली के गुण–दोष से पूर्णतः परिचित थे। साथ ही देश की निरक्षरता उनसे छिपी न थी। किन्तु उनकी यह धारणा थी कि भारतीयों को भारतीय समाज तथा वातावरण के अनुकूल ही शिक्षा दी जाए। शिक्षा का माध्यम भी वे देशभाषा को बनाना चाहते थे। इन्हीं विचारों से अनुप्राणित होकर उन्होंने भारतवर्ष के पूर्व गौरव के अनुकूल नालन्दा और तक्षशिला के आदेश पर एक राष्ट्रीय हिन्दू विश्वविद्यालय की संस्थापना का संकल्प किया।[1]

बाल्यावस्था से ही देश, धर्म और संस्कृति की दुरवस्था देखकर जिनका दिल रोता था और जो अहर्निश उसकी कारण मीमांसा कर उसके पुनरुत्थान का मार्ग ढूँढने में व्यस्त थे, उन महामना को यह अनुभव करते देर न लगी कि हमारे युवकों को संसार–भ्रष्ट करने वाली इन संस्थाओं से अलग एक ऐसा शिक्षा–केन्द्र स्थापित किया जाए, जिसमें पढ़कर जीवन–क्षेत्र में पदार्पण करने वाले प्रत्येक छात्र के रोम–रोम में देश–भक्ति के साथ–साथ धर्म और संस्कृति का अनुराग व्याप्त हो। शिक्षा जगत् की कल्पना करते समय उनके सामने कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड के चित्र नहीं नाचते थे। उनके सामने तो तक्षशिला और नालन्दा के वे विश्वविद्यालय साकार हो उठते थे, जहाँ दस हजार से भी अधिक विद्यार्थी श्रेष्ठतम आचार्यों के सम्पर्क में शिक्षा ग्रहण कर सारे संसार को 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की चुनौती देते थे।[2]

राष्ट्रीय शिक्षा की उनकी परिभाषाओं में से एक यह थी कि ब्रिटिश शासन ने भारत में हमारी वास्तविक शिक्षा के लिए जो कुछ नहीं किया है, वह भी राष्ट्रीय शिक्षा का एक अंग है तथा औद्योगिक शिक्षा भी उसका एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है।[3]

पण्डित मदनमोहन मालवीय उदात्त बौद्धिक एकता के प्रतिमान तथा शिक्षा के क्षेत्र में पथ–प्रदर्शक थे, जिनका नाम सदैव के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इसकी स्थापना तथा विकास से जुड़ा रहेगा।[4]

ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के सदस्य कर्नल बेजवुड ने मालवीय जी द्वारा भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में की गयी सेवाओं का स्मरण इन शब्दों में किया था[5]– 'सारा यूरोप भली–भाँति जानता है कि भारतीय शिक्षा–क्षेत्र मालवीय जी का कितना ऋणी है। मैंने आजतक कोई दूसरा संस्थान नहीं देखा, जो मुख्यतः एक ही व्यक्ति की कृति हो। यदि पण्डित मालवीय जी राजनीतिज्ञ न होते तो वे शिक्षा संसार के सबसे बड़े नेता के रूप में मान्य किए जाते और यदि उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय की सृष्टि न की होती तो वे संसार के बहुत बड़े राजनीतिज्ञ माने जाते। भारत और पाश्चात्य देशों के इतिहास में यह बड़ा विचित्र समन्वय है।'

2.0 मालवीय जी का शैक्षणिक दृष्टिकोण :

उन्होंने राष्ट्रीय विचारधारा के अनुरूप शिक्षा–संस्थाओं की स्थापना के लिए सक्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया, भले ही उसके लिए चाहे सरकारी अनुदान भी क्यों न मिले किन्तु इसी आधार पर वे वर्तमान शिक्षा–संस्थाओं को बन्द कर देने के भी विरुद्ध थे।[6]

मालवीय जी का शिक्षा–संबंधी दृष्टिकोण बहुत विस्तृत था। वे स्कूलों और कॉलेजों में दी जाने वाली शिक्षा को ही सब कुछ नहीं समझते थे, बल्कि वे तो विद्यार्थियों को आदर्शनिष्ठ, चरित्रवान तथा गुणवान बनाने के पक्षपाती थे। छात्रों के चरित्र निर्माण पर वे विशेष बल देते थे। एक अवसर पर मालवीय जी ने कहा था[7]– 'विश्वविद्यालय में निवास करने का पहला कर्त्तव्य यह है कि व्यायाम करके शरीर बनाऐं, पहले स्वास्थ्य सुधारे, फिर विद्या पढ़े।' स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन विचरण करे तो जीवन का लाभ उठा सकते हैं। नित्य सवेरे–शाम नियम से व्यायाम करे। शाम को खेले। मैदान में विचरे। जल्दी भोजन करे और नियम से नित्य अध्ययन करे। धार्मिक उत्सवों, एकादशी कथा, गीता–प्रवचन आदि में उपस्थित रहे और विद्वानों का उपदेश ले। उनका अनुभव ग्रहण करे और आशीर्वाद ले। अपनी रक्षा स्वयं करे। समय की पाबन्दी रहे। व्यर्थ समय नष्ट न करे। माता पूज्य है। हम माता से शिक्षा लें और उनके उपदेश सुनें।

इस प्रकार मालवीय जी को बालकों की शिक्षा का बहुत ध्यान था। वे चाहते थे कि पढ़ाई–लिखाई के साथ ही बालकों के शरीर–निर्माण पर भी उचित ध्यान दिया जाना चाहिए और अध्यापकों का कृर्त्तव्य है वे अपने शिष्यों के अन्दर धार्मिक भावना का विकास करें, बालकों को मालवीय जी ने निम्नलिखित दोहे में इस प्रकार उपदेश दिया था–[8]

'दूध पियो कसरत करो, नित्य जपो हरिनाम।
हिम्मत से कारज करो, पूरेंगे सब काम।।'

3.0 प्राथमिक शिक्षा :

मालवीय जी ने प्राथमिक शिक्षा के प्रसार पर विशेष बल दिया।[9] उनका यह विश्वास था कि प्राथमिक शिक्षा के बिना न तो औद्योगिक एवं तकनीकी शिक्षा की स्थायी नींव डाली जा सकती है और न ही कृषि संबंधी सुधारों को ही प्रभावशाली बनाया जा सकता है।[10] उन्हें पूर्ण विश्वास था कि प्राथमिक शिक्षा अन्य समस्त प्रकार की शिक्षाओं का मूलाधार एवं क्षमता तथा आर्थिक प्रगति के लिए अनिवार्य है।[11] इन्हीं कारणों से मालवीय जी ने बालक–बालिकाओं के लिए अनिवार्य सार्वभौमिक एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की वकालत की।[12] उनके अनुसार इससे अज्ञानता, अस्पृश्यता, साम्प्रदायिक कटुता आदि की समस्याओं का समाधान होगा तथा लोगों में स्वच्छता के प्रति झुकाव होगा। यह लोगों को सैनिक युद्धों आर्थिक संघर्षों में अपने को सुरक्षित रखने के लिए शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक दृष्टि से अधिक सक्षम बनाने में सहायक होगी।[13] यह महिलाओं तथा हरिजनों के जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने में सहायता देगी।[14] प्राथमिक शिक्षा कारीगर तथा श्रमिक जनसंख्या के लिए भी आवश्यक मानी गयी।[15]

4.0 माध्यमिक शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा :

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक एवं विश्वविद्यालय शिक्षा के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतू का कार्य करती है। इसकी सफलता पर ही विश्वविद्यालय की शिक्षा की सफलता निर्भर करती है।[16] यह सफलता दोनों ही दृष्टियों से है– विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए अच्छे विद्यार्थियों की संगति के लिए तथा अपने लौकिक जीवन में जीविका का साधन पाने के लिए। वस्तुतः माध्यमिक शिक्षा का महत्त्व अवर्णनीय है। मालवीय जी की योजना में चौदह से अठारह वर्ष

की आयु वर्ग के हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट के छात्र माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत आते थे। उनकी यह आकांक्षा थी कि माध्यमिक शिक्षा ऐसी संगठित की जाए कि छात्र उसके उपरांत विश्वविद्यालय के व्याख्यान भली–भाँति समझ सकें तथा यदि उन्हें अपनी पढ़ाई रोक देनी पड़े तो वे अपनी जीविका अर्जित कर सकें। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने विज्ञान के अध्ययन के साथ ही औद्योगिक शिक्षा पर बल दिया।[17] वे चाहते थे कि प्रत्येक जिले में एक इण्टरमिडिएट कॉलेज हो।

5.0 विश्वविद्यालय शिक्षा :

विश्वविद्यालय शिक्षा के संबंध में मालवीय जी का दृष्टिकोण किंचित् विस्तार से उल्लेख करने योग्य है। क्योंकि मालवीय जी को एक विश्वविद्यालय की स्थापना एवं उनके संचालन का व्यावहारिक अनुभव था। मालवीय जी लार्ड कर्जन से सहमत थे कि 'किसी भी विश्वविद्यालय का ऐसा स्थान होना चाहिए', जहाँ समस्त ज्ञान उसके जिज्ञासु विद्यार्थियों को उसके अध्यापकों द्वारा पढ़ाया जाए, जहाँ शिक्षा की नींव अच्छे उद्देश्यों के लिए पड़ी है, जहाँ इसकी सीमाएँ निरन्तर विस्तृत होती जा रही है, यह अपने चारों ओर सम्बद्धता के कारण गर्वयुक्त कॉलेज स्तर की संस्थाओं से घिरा रहे, जिसके छात्र विश्वविद्यालय से निकट स्थित आवासीय भवनों में रहते हों तथा सामूहिक जीवन की आन्तरिक अनुमति करते हों, जहाँ विशेषज्ञ– राय से विश्वविद्यालय की प्रशासी संस्था निर्देश प्राप्त करती रहे तथा अध्यापकों का छात्रों पर वास्तविक प्रभाव हो, जहाँ पाठ्यक्रम का निर्माण केवल स्वायत्तता के विकास के लिए नहीं, अपितु चिन्तनशील मस्तिष्क के विकास के लिए होता हो, जहाँ छात्र स्वयं अपने ज्ञान का कपाट खोलेंगे तथा वही उनके जीवन–यापन का साधन हो।[18] मालवीय जी के अनुसार[19]– कोई भी विश्वविद्यालय, 'उच्चतम शिक्षा के उन्नयन के लिए प्रतिभा की खोज एवं विकास के लिए, वैज्ञानिक ज्ञान तथा शोध के लिए एवं व्यावसायिक स्तर के उदात्तीकरण का स्थान है।'

6.0 शारीरिक प्रशिक्षण :

मालवीय जी सैनिक प्रशिक्षण सहित शारीरिक प्रशिक्षण को विशेष महत्त्व देते थे।[20] वे चाहते थे कि प्रत्येक मोहल्ले में एक अखाड़ा या व्यायामशाला खोली जाए तथा उन्होंने 'अखिल भारतीय केन्द्रीय क्रीड़ा संघ' की स्थापना की योजना भी बनाई थी, जो प्रतियोगिताओं का आयोजन करें तथा देश के युवकों के स्वास्थ्य सुधार हेतु उपायों की योजना बनाएं।

मालवीय जी ने अपने व्याख्यानों में बार–बार शारीरिक प्रशिक्षण के महत्त्व पर बल दिया करते थे। वे प्रायः 'विजयी भुजयोवीर्यम अतुलम्' संस्कृत सूक्ति को दोहराया करते थे। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वे कहा करते थे कि महान् उद्देश्यों को लेकर चलने वाले (गोपाल कृष्ण गोखले–जैसे) व्यक्तियों को अपनी शारीरिक कमजोरी के कारण कार्यक्रमों में कटौती करनी पड़ी। चतुर्दिक अथवा विशेषतः शारीरिक पौरुष के मूल्य पर ज्ञानार्जन को महत्त्व देना व्यक्ति विशेष तथा समाज के लिए विनाशकारी निष्फल प्रयास है। अपने समस्त व्याख्यानों में मालवीय जी शारीरिक शक्ति–समवर्द्धन पर उपदेश दिए बिना नहीं रहते थे।[21] महामना का स्पष्ट मत था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है, इसलिए वे छात्रों ही नहीं, कर्मचारियों तक के स्वास्थ्य पर ध्यान रखते थे।

7.0 शिक्षा–संस्थाओं के लिए धन–संग्रह करना :

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महामना मालवीय जी की देशभक्ति, शिक्षा–प्रेम, लगन, अदम्य उत्साह एवं साधन का ज्वलन्त प्रतीक है। उन्हें अपने परिवार के सदस्यों से भी अधिक इससे प्रेम था। बिस्तर पर लेटे हुए भी वे हरदम उसी की चिन्ता किया करते थे। अपनी

कल्पना का संसार बनाते थे। उनकी शय्या के नीचे दो दान–पात्र रखे रहते थे– एक सनातन धर्म का और दूसरा प्रस्तावित विश्वनाथ मंदिर और विश्वविद्यालय का।[22] दर्शनार्थियों से उनका प्रश्न होता[23]– 'कहिए, कहाँ से आए?', 'हैदराबाद से', 'विश्वविद्यालय देखा?', 'जी हाँ', 'पसन्द आया?', 'महाराज, क्या कहना है? स्वर्ग है, स्वर्ग।', 'कुछ सहायता दीजिएगा?' 'अवश्य जो आज्ञा हो।' 'क्या काम करते हो?', 'मिल में नौकर हूँ।' 'मासिक वेतन क्या है?', 'एक हजार रुपया।' 'एक मास का पारिश्रमिक दे दीजिएगा?' आगन्तुक ने पाँच सौ रुपए देकर प्रार्थना की 'शेष घर जाकर भेज दूँगा।' 'बहुत अच्छा।' वे दर्शनार्थियों से प्रायः कहा करते– भक्ति श्रद्धा से एक पैसा भी बहुत है। वास्तव में वे भिक्षुक सम्राट थे। महात्मा जी के शब्दों में वे भारत के महान् भिखारी थे। आपका सिद्धान्त था[24]–

'मरि जाऊँ मांगू नहीं, अपने हित के काज।
परमारथ के कारने, मोहि न आवे लाज।।'

बस इसी भावना से प्रेरित होकर वे जीवनपर्यन्त हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए एक भिखारी का बाना धारण किए रहे। कहा गया है[25]– सौ में एक आदमी बहादुर होता है, हजार में एक आदमी वेद का पण्डित, दस हजार में एक आदमी मंच पर धड़ल्ले से बोलने वाला होता है, परन्तु दान देने वाला मनुष्य होता है अथवा नहीं होता, इसमें सन्देह है। मालवीय ने शास्त्र के इस सन्देह का निराकरण कर दिया। उन्होंने दिखला दिया कि यदि भगवान् की कृपा हो तो ऐसा भी हो सकता है कि मांगने वाला एक हो और देने वाले सैंकड़ों।

8.0 स्त्री–शिक्षा के समर्थक :

शिक्षा की कोई भी योजना, वह कैसी भी क्यों न हो तब तक अपूर्ण रहेगी, जब तक कि किसी समुदाय का आधा हिस्सा अज्ञान में पनपने दिया जाएगा तथा ज्ञान के समस्त प्रकार से उसे वंचित रखा जाएगा तथा समस्त उच्चतर जीवन जो ज्ञान से प्राप्त होते हैं, से दूर रखा जाएगा।[26] मालवीय जी इस संबंध में गम्भीर रूप से दुखी रहते थे कि बालिकाओं की शिक्षा के मामले में उत्तरप्रदेश अत्यन्त पिछड़ा हुआ था।[27] उन्होंने इस बात की वकालत की कि स्त्रियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति प्रदान की जाए। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि स्त्रियाँ शिक्षा ग्रहण करें तो कोई भी अवांछित घटना न घटे।[28] वस्तुतः मालवीय जी की दृष्टि में बालक और बालिकाओं की शिक्षा बराबर महत्त्व रखती थी। वे चाहते थे कि लड़कियाँ सीता और सावित्री की तरह पवित्र हों। आज भी पवित्र स्त्री शिक्षा की कल्पना काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में महिला विद्यालय और छात्रावास के रूप में विद्यमान है। काशी में एक उत्कृष्ट महिला महाविद्यालय की स्थापना स्त्री–शिक्षा में उनकी पूर्ण निष्ठा द्योतित करती है।

9.0 हरिजनों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए हर प्रकार की सहायता देना :

महामना मालवीय जी समाज के दलित एवं पिछड़े वर्गों के लोगों को, विशेषतः हरिजनों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे। वैसे तो जाति आदि का भेदभाव किए बिना, वे हर वर्ग के छात्रों को सहायता प्रदान करना अपना कर्त्तव्य मानते थे किन्तु हरिजन छात्रों के प्रति उनके हृदय में विशेष करुणा का भाव इसलिए था क्योंकि उनके जीवन में कठिनाइयाँ ज्यादा थीं। डॉ. ईश्वर प्रसाद के अनुसार[29]– सन् 1925–26 की एक घटना स्मरण आ रही है। बाबू जगजीवन राम आरा टाउन स्कूल में मैट्रिक पास करके अपने भविष्य के लिए चिन्तित और परेशान थे। पूज्य मालवीय जी हिन्दू सभा की अध्यक्षता करने आरा पधारे थे। आरा शहर के मैदान में मालवीय जी का भाषण था। पचास हजार से कम भीड़ न होगी– सरअली ईमाम, सरहसन ईमाम, मौलाना मजरूल हक आदि सभी उस

सभा में विद्यमान थे। भाषण समाप्त होने पर जब मालवीय जी कार में बैठने लगे तो भुवनेश्वरनाथ मिश्र जगजीवनराम को साथ लेकर उनके निकट पहुँचे और बतलाया कि 'हमारे जिले का चमार (जो कि उस समय बोलते थे) का एक बालक मैट्रिक पास करके अपनी पढ़ाई–लिखाई के लिए बेहद परेशान है।' मालवीय जी ने पूरे ध्यान से उस बालक को देखा और तुरन्त बोले कि इन्हें अपने साथ ही विश्वविद्यालय में ले आना, जहाँ बैठकर मेरा गोविन्द पढ़ता है, वहाँ यह भी पढ़ेंगे। जगजीवन राम हिन्दू विश्वविद्यालय में आए और मालवीय जी ने उनके पढ़ने–लिखने, रहन–सहन, भोजन–आवास आदि की सारी व्यवस्था अपनी ओर से कर दी। इस प्रकार मालवीय जी ने अपने हरिजन–बालिकों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग प्रदान कर राष्ट्रीय शिक्षा एवं सामाजिक समानता की प्रवृत्ति के विकास में अमूल्य योगदान दिया।

10.0 आदर्श कुलपति :

मालवीय जी एक आदर्श कुलपति थे। क्या छात्रों के प्रति, क्या अध्यापकों के प्रति और क्या कर्मचारियों के प्रति मालवीय जी का व्यवहार सदा समान होता था। उनका दृष्टिकोण और उनकी कार्य–प्रणाली अपने ढंग की निराली थी। वे सभी को अपने अच्छे व्यवहार से अपने सांचे में ढाल लेते थे। उनका स्वभाव था कि वे छोटी–बड़ी सभी बातों का निरीक्षण स्वयं किया करते थे और सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति भी किया करते थे। यही उनकी महत्ता कही जा सकती है।[30] मालवीय जी सच्चे अर्थों में हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति थे। उनके जीवन की एक–एक सांस विश्वविद्यालय के लिए अर्पित थी। उन्होंने विश्वविद्यालय को बराबर दर्जा ही नहीं दिया, वहाँ से कुछ पाने की कामना कभी न की। अतः यह कहना गलत न होगा कि वे विश्वविद्यालय के फरिश्ता संरक्षक थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महामना मालवीय जी विद्यार्थियों के प्रति बहुत उदार थे, विद्यार्थियों की सहायता करने में वे सदैव तत्पर रहते थे। चाहे स्त्री शिक्षा की बात हो, गरीब, कमजोर वर्ग की बात हो वे सभी को उच्च शिक्षा देना चाहते थे। उनका विचार था कि जब तक समाज का प्रत्येक नागरिक समझदार पढ़ा–लिखा नहीं होगा, तब तक एक अच्छे समाज, देश की नींव मुश्किल ही नहीं वरन् असम्भव है। इसलिए मालवीय जीने अपना पूरा जीवन लोगों की सेवा के लिए न्यौछावर कर दिया।

11.0 संदर्भ

1. महामना मालवीय जी रमाशंकर त्रिपाठी, Mahamana Malaviya Ji British, Centenary Commemoration, Vol. 25th December 1961, Page 141
2. युगपुरुष मालवीय जी, फतेहचन्द शर्मा 'आराधक', पृ. 33
3. N.N. Godbale Some of my Reminiseences of the Late Pandit Madan Mohan Malaviya Ji, Birth Centuary Commemoration, Vol., P. 81
4. Aiyer C.P. Rama Swami, Forward, Mahamana Malaviya Ji, Birth Centenary Commemoration, Vol. 25th December 1961
5. पण्डित मदनमोहन मालवीय, सीताराम चतुर्वेदी, पृ. 124, पर उद्धृत।
6. Joshi S.S. Mahamana Malaviya Ji : A Tribute and Reminiseences, Madan Mohan Malaviya British, Centenary Commemoration, Vol. 102
7. मदनमोहन मालवीय, सुनीत व्यास, पृ. 59
8. मदनमोहन मालवीय, पृ. 60

9. Abstract of the Proceedings of the Legislative council for the United provinces of Agra & Oudh, March 30, 1907, P. 64 and see also- Report of the Indian Industrial Commission, 1916-18, P. 275
10. Abstract of the Proceedings of the Legislative council for the United provinces of Agra & Oudh, April 15, 1905, P. 25
11. Report of the Indian Industrial Commission, 1916-18, P. 275 and see also Abstract of the Proceedings of the Legislative council for the United provinces of Agra & Oudh, April 15, 1905, P. 25
12. Proceedings of Imperial Legislative council Vol. L, March 19, 1912, P. 442
13. Ibid, Diwan Chand, Vol. LV, February 28, 1917, P. 463
14. वही, पृ. 465 और भी देखिए,
Proceedings of the Impl. Legislative council, Vol. LIV, March 16, 1916, P. 378
15. Report of the Indian Industrial Commission, 1916, P. 275
16. Banaras Hindu University, V.A.Sundram, P. 488
17. Abstract of the Proceedings of the Legislative council for the United provinces of Agra & Oudh, April 7, 1908, P. 63-64
18. वही, पृ. 63–64
19. Abstract of the Proceedings of the Legislative council for the United provinces of Agra & Oudh, April 8, 1904, P. 23
20. New India, January 30, 1917
21. Joshi S.S. Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya Ji : A Tribute and Remincences, Mahamana Malaviya Ji, British Centenary Commemoration, Vol. 101
22. सम्मेलन पत्रिका, श्रद्धांजलि विशेषांक, विष्णुकान्त, मालवीय का लेख, पृ. 138
23. वही, और भी देखिए, मदन मोहन मालवीय, 'सुनीत व्यास', पृ. 34
24. सम्मेलन पत्रिका, श्रद्धांजलि विशेषांक, विष्णुकान्त, मालवीय का लेख, पृ. 138 वही, और भी देखिए, मदन मोहन मालवीय, 'सुनीत व्यास', पृ. 34
25. मदनमोहन मालवीय, सुनीत व्यास, पृ. 33
26. Proceedings of imperial Legislative council Vol. LIX, March 16, 1911, P. 468
27. यह उत्तरप्रदेश में, 1906 में 140 में 1 का औसत था–देखिए Abstract of the Proceedings of the Legislative council for the United provinces of Agra & Oudh, April 11, 1906, P. 58-59 और भी देखिए, दसवें राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन, पृ. 1897 का विवरण
28. लेख, पृ. 142–46, 242–43
29. 'महामना मालवीय' –डॉ. ईश्वर प्रसाद वर्मा, साहित्य केन्द्र प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली, तीसरा संस्करण, 1978, पृ. 17–18
30. मदन मोहन मालवीय, सुनीत व्यास, पृ. 28